Sarcouncil Journal of Humanities and Cultural Studies

ISSN(Online): 2945-3658

Volume- 05| Issue- 04| 2026

Research Article

Received: 10-06-2026 | **Accepted:** 05-07-2026 | **Published:** 18-07-2026

वर्तमान परिदृश्य में विशेष पिछड़ी जनजाति (बैगा) एवं आजीविका

प्रो. प्रतिभा जे. मिश्रा[1], अविनाश बहादुर चन्द्र दुबे[2]

[1] प्रोफेसर समाजकार्य विभाग गुरु घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

[2] पीएच.डी. स्कॉलर समाजकार्य विभाग गुरु घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

Abstract: *बैगा जनजाति भारत की विशेष पिछड़ी जनजातियों* (**PVTG**) *में सम्मिलित एक महत्वपूर्ण समुदाय है, जो मुख्यतः मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के वन क्षेत्रों में निवास करता है। इनकी आजीविका परंपरागत रूप से वनों, बेवर खेती और वनोपज संग्रह पर आधारित रही है। वर्तमान परिदृश्य में विकास योजनाओं, वन कानूनों एवं सामाजिक परिवर्तन के कारण उनकी आजीविका में अनेक बदलाव आए हैं। शासकीय योजनाओं के माध्यम से इनके जीवन स्तर में सुधार का प्रयास किया जा रहा है, किन्तु इनका प्रभाव सीमित है। आज भी बैगा समुदाय गरीबी, अशिक्षा और संसाधनों की कमी जैसी समस्याओं से जूझ रहा है। इस अध्ययन में बैगा जनजाति की आजीविका की वर्तमान स्थिति, चुनौतियों और संभावनाओं का विश्लेषण किया गया है।.*

Keywords: *बैगा जनजाति, आजीविका, विशेष पिछड़ी जनजाति, वनोपज, बेवर खेती, शासकीय योजनाएँ, ग्रामीण विकास, वनाधिकार, गरीबी, सामाजिक परिवर्तन.*

परिचय

भारत एक विविधतापूर्ण देश है जहाँ विभिन्न जनजातियाँ अपनी विशिष्ट पहचान के साथ निवास करती हैं। बैगा जनजाति उन विशेष पिछड़ी जनजातियों में से एक है, जिनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति अत्यंत कमजोर मानी जाती है। यह जनजाति मुख्यतः मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के वन क्षेत्रों में निवास करती है तथा प्रकृति के साथ गहरा संबंध रखती है। बैगा जनजाति की जीवन शैली सरल एवं प्राकृतिक है, जहाँ वे जंगलों पर निर्भर रहते हैं। उनकी आजीविका का प्रमुख आधार बेवर (झूम) खेती, वनोपज संग्रह, शिकार तथा मजदूरी रहा है। किन्तु आधुनिक विकास, वन कानूनों और संसाधनों के क्षरण के कारण उनकी पारंपरिक आजीविका प्रणाली प्रभावित हुई है। सरकार द्वारा विभिन्न योजनाओं के माध्यम से उनके जीवन स्तर को सुधारने का प्रयास किया जा रहा है, जैसे रोजगार गारंटी योजना, आवास योजना और खाद्यान्न वितरण प्रणाली। इसके बावजूद आज भी उनकी स्थिति संतोषजनक नहीं है। अतः वर्तमान परिदृश्य में बैगा जनजाति की आजीविका का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

पारंपरिक आजीविका के साधन

बैगा जनजाति की पारंपरिक आजीविका मुख्यतः प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित रही है। बेवर खेती (झूम खेती) उनकी प्रमुख कृषि प्रणाली थी, जिसमें वे जंगल की भूमि को साफ करके अस्थायी खेती करते थे। इसके अतिरिक्त वे कंद-मूल, फल-फूल, लकड़ी तथा अन्य वनोपज का संग्रह करते थे। शिकार भी उनकी आजीविका का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है, जिससे उन्हें भोजन प्राप्त होता था। इसके साथ ही वे मछली पकड़ना और छोटे-मोटे घरेलू कार्यों से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे। बैगा समुदाय की आजीविका आत्मनिर्भर थी और वे प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर जीवन यापन करते थे। उनकी आर्थिक गतिविधियाँ सीमित थीं, किन्तु उनकी आवश्यकताएँ भी कम थीं, जिससे उनका जीवन संतुलित रहता था।

वर्तमान परिदृश्य में आजीविका की स्थिति

वर्तमान समय में बैगा जनजाति की आजीविका में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिलते हैं। वन कानूनों के कारण बेवर खेती पर प्रतिबंध लग गया है, जिससे उनकी पारंपरिक कृषि प्रणाली समाप्त हो गई है। आज बैगा समुदाय मजदूरी, कृषि कार्य और शासकीय योजनाओं पर अधिक निर्भर हो गया है। वनोपज संग्रह अब भी उनकी आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, किन्तु इसमें भी कमी आई है। शिक्षा और जागरूकता के अभाव के कारण वे आधुनिक रोजगार के अवसरों का पूर्ण लाभ नहीं उठा पा रहे हैं। परिणामस्वरूप उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर बनी हुई है।

शासकीय योजनाओं का प्रभाव

सरकार द्वारा बैगा जनजाति के विकास के लिए विभिन्न योजनाएँ चलाई जा रही हैं। महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (MGNREGA) के माध्यम से उन्हें रोजगार के अवसर प्रदान किए जा रहे हैं। प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत उन्हें पक्के मकान उपलब्ध कराए जा रहे हैं। सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS) के माध्यम से सस्ते खाद्यान्न उपलब्ध कराए जाते हैं। इन योजनाओं से बैगा समुदाय को कुछ हद तक आर्थिक सहायता मिली है, किन्तु योजनाओं का क्रियान्वयन पूर्णतः प्रभावी नहीं है। जागरूकता की कमी और

Copyright © 2022 The Author(s): This work is licensed under a Creative Commons Attribution- NonCommercial-NoDerivatives 4.0 (CC BY-NC-ND 4.0) International License

***Corresponding Author:** प्रो. प्रतिभा जे. मिश्रा

DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.21924351

प्रशासनिक समस्याओं के कारण सभी लाभार्थियों तक योजनाओं का लाभ नहीं पहुँच पाता।

आजीविका से संबंधित प्रमुख चुनौतियाँ

बैगा जनजाति अनेक समस्याओं का सामना कर रही है। इनमें प्रमुख हैं – गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी और संसाधनों की कमी। वन संसाधनों की घटती उपलब्धता और पारंपरिक आजीविका के समाप्त होने से उनकी आर्थिक स्थिति और कमजोर हुई है। सरकारी योजनाओं की जानकारी का अभाव तथा भ्रष्टाचार जैसी समस्याएँ भी उनके विकास में बाधा उत्पन्न करती हैं। स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी और कुपोषण भी उनकी कार्यक्षमता को प्रभावित करते हैं।

बैगा जनजाति का सामाजिक एवं आर्थिक परिचय

बैगा जनजाति एक विशेष पिछड़ी जनजाति है, जो सामाजिक रूप से पिछड़ी और आर्थिक रूप से कमजोर मानी जाती है। उनकी सामाजिक संरचना सरल एवं पारंपरिक है। वे छोटे-छोटे गाँवों में रहते हैं और उनका जीवन प्रकृति के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। उनकी आय के स्रोत सीमित हैं, जिससे उनका जीवन स्तर निम्न रहता है। शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी के कारण उनका समग्र विकास बाधित होता है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि बैगा जनजाति की आजीविका वर्तमान समय में अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है। शासकीय योजनाओं के बावजूद उनकी आर्थिक स्थिति में अपेक्षित सुधार नहीं हो पाया है। आवश्यक है कि योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाए और बैगा समुदाय को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया जाए। शिक्षा, कौशल विकास और स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार के माध्यम से उनकी आजीविका को सुदृढ़ किया जा सकता है। वनाधिकार अधिनियम का सही क्रियान्वयन तथा स्थानीय संसाधनों का सतत उपयोग उनके विकास में सहायक सिद्ध हो सकता है।

संदर्भ सूची

1. Akhtar, S. “A study of the Knowledge and anitnde of secondary school Teachers in Karanataka in respect of population education Ph.D. Education of mysore.” (1988).
2. Alam, S.A. “Tribal Demography in Madhya Pradesh, Bhopal: Jai Bharat Publishing House.” (1972):
3. Banerjee, M. “Tribal Population of Singhbhum, Geg.” Review of India (1976): 38.2.
4. Billimoria, N. M. “Some Ancient Tribes of India”. The Indian Geog. Journal of India. (1946): 21. 2.
5. Bose, N.K. “Tribal Welfare”. Geg. Rev. of India (1953): XV.3.
6. Chapel, Fill “A Student for population Education Goods Generalization and behavioral objectives. corolina population centre. (1978).
7. Deshpande, C.D. “Two Naga Villages: A Reconnaissance Study, Geographical outlook, Vol. IX. (1972-73).
8. Deshpandey N.R. & Ahmad, A. “Tribal literacy in India, its Determinants and Correlates”. The Geographer, 32. 1. (1985)
9. Dev, A. & Guha, S.B. “Tribes in Himachal Pradesh: Socio-Eco Characteristics. The National Geog. Journal of India. 32. 4. (1986): 281-286.
10. Dutta, C. “Some Aspects of Tribal Development and its impact of Environment Impact and Development on Environment (Vol.II) The Geographical Society of India, Culcutta, (1987): 1-3.
11. Dutta, Majumdar “The Tribal Problem in the Tribal People of India” Publication Division, Ministry of Information & Broadcasting, Govt. of India. (1973)
12. Gautam, Rajesh K “Baigas The Hunter Gatherers of Central India.” Readworthy Publications (P) Ltd. A-18, Mohan Garden Near Nawada Metro Station, New Delhi. (2011)
13. Joshi, Y.G. “Contradiction Between the Educational Infrastructure and Achivements: A Spatial Analysis of Educational Programme in the Tribal Region: Annals (1984): 27-31.
14. Kahr Harsitpal- A study of population awareness in relation to attitudes towards environmental education and population education of professional Teachers Phd Edu. Panjab University. (1992).
15. Karajgwakar- A study of the effective of education population growth, Ph.D. Thesis Vikarm University. (1989).

Source of support: Nil; **Conflict of interest:** Nil.

Cite this article as:

प्रो. प्रतिभा जे. मिश्रा, अविनाश बहादुर चन्द्र दुबे. “वर्तमान परिदृश्य में विशेष पिछड़ी जनजाति (बैगा) एवं आजीविका”. *Sarcouncil Journal of Humanities and Cultural Studies* 5.4 (2026): pp 1-2.

Copyright © 2022 The Author(s): This work is licensed under a Creative Commons Attribution- NonCommercial-NoDerivatives 4.0 (CC BY-NC-ND 4.0) International License

Publisher: SARC Publisher